शिष्यता के अनिवार्य तत्व

अनिवार्य शिक्षाएं

छोटे समूहों की अगुवाई करना

अध्याय 4: छोटे समूहों में स्वस्थ व आपसी सम्बन्धों को प्रोत्साहित करना

जब बाइबल कहती है कि मसीही लोग अपने आपसी प्रेम भाव की वजह से पहिचाने जाएंगे(यूहन्ना 13:35) तो ऐसा अनुमान लगाना स्वाभाविक है कि निश्चय ही मसीही लोग पहले से ही एक दूसरे को प्रेम करने वाले रहे होंगे। लेकिन ज़्यादातर ऐसा होता है कि छोटे समूहों में दो लोगों के बीच मधुर रिश्ते मिलना या ढूंढ़ पाना आसान काम नहीं होता। क्या उस समूह को खत्म कर देना चाहिये ? या फिर कोई ऐसा तरीका जिसके तहत कुछ प्रारम्भिक दिक्कतों के बावजूद हम समूह में स्वस्थ सम्बन्धों को प्रोत्साहित कर सकें।

स्वस्थ छोटे समूह का निर्माण समूह के उद्देश्य को समझने,तथा एक साथ मिलकर उस उद्देश्य के प्रति काम करने पर निर्भर करता है। अगर सही मायनों में कहा जाए तो इसका अर्थ अपनी इच्छाओं का इनकार करके मसीह पर अपनी नज़रे लगाना और उसकी इच्छा को पूरा करना है। करना मुश्किल मगर कहना आसान होता है? मगर यह काम करना ज़रूरी है।

निश्चय ही किसी भी समूह को भाग होने पर कुछ व्यक्तिगत आशीषें प्राप्त होती हैं, खास तौर पर जब हम समूह के सदस्यों के साथ आपसी सम्बन्ध बनाते हैं। इन रिश्तों को बहुत से तरीकों से विकसित किया व सुन्दर बनाया जा सकता है, और अगर हम समूह के बहुत से कार्यों को देखें तो यह स्थान अपने रिश्तों की शुरूआत करने के लिए अति उपयुक्त स्थान है।

छोटे समूह के उददेश्यों की थोड़ी बहुत भी स्पष्ट समझ होने से, समूह के सदस्यों को यह समझने में सहायता मिलेगी कि यदि वे इस समूह में शामिल होते हैं तो उनको यहां क्या प्राप्त होगा। निश्चय ही किसी भी समूह को भाग होने पर कुछ व्यक्तिगत आशीषें प्राप्त होती हैं, खास तौर पर जब हम समूह के सदस्यों के साथ आपसी सम्बन्ध बनाते हैं। इन रिश्तों को बहुत से तरीकों से विकसित किया व सुन्दर बनाया जा सकता है, और अगर हम समूह के बहुत से कार्यों को देखें तो यह स्थान अपने रिश्तों की शुरूआत करने के लिए अति उपयुक्त स्थान है।

समूह का एक कार्य उसके सदस्यों की व्यक्तिगत योग्यताओं व वरदानों को सशक्त करना और उन्हें परमेश्वर के वचनों के ज्ञान में बढ़ाना है। समूह के पास ऐसा माहौल बनाने की अनोखी जिम्मेदारी है जिसमें समूह के सारे लोग एक दूसरे के वरदानों को पहिचान उन्हें उस वरदान में बढ़ने में सहायता कर सकते हैं। छोटे समूह में सेवा करने, अगुवाई करने, प्रार्थना करने, तथा एक दूसरे के प्रति सेवा निभाने के सारे अवसर विद्यमान होते हैं और वहां हर एक जन के वरदानों को चमकाया जा सकता है। जब सदस्य एक दूसरे प्रभु में बढ़ते और परिपक्व होते हुए देखते हैं, तो उनके सम्बन्धों में भी मज़बूती आती है। समूह में आने वाले भाई, बहनों को ईश्वरीयता में बढ़ते देखने तथा उनके जीवनों के द्वारा परमेश्वर की महिमा होते देखकर मन को बहुत आनन्द प्राप्त होता है।

अतः मसीहीयत अकेले खेले जाने वाला को खेल नहीं है। हमें यह याद रखना चाहिए कि समूह का एक और काम एक दूसरे के व्यक्तिगत वरदानों को समूह की उन्नति व दूसरों तक कलाम पहुचाने की प्रक्रिया में इस्तेमाल करना है। हर एक सदस्य को सदैव याद रखना चाहिए कि वे मसीह की विशाल देह के एक छोटे से अंग हैं। 1 कुरिन्थियों 12 व रोमियो 12 दोनों ही अध्यायों में बहुत से अंगों से मिलकर बनी देह की कल्पना करते हुए बताया गया है कि कलीसिया को किस प्रकार कार्य करना चाहिए। यह सिद्धान्त छोटे समूहों पर भी लागू होता है, जो कि एक छोटी देह है। जहां समूह का एक सदस्य कमज़ोर होता है, उसी क्षेत्र में समूह का कोई व्यक्ति मज़बूत हो सकता है। अपने सारी पूरक योग्यताओं के साथ समूह में भागीदारी करने से हर एक व्यक्ति के वरदान को और भी अधिक प्रभावशाली बनने में सहायता मिलती है। एक दल के रूप में किसी परियोजना या काम को करने का बेढ़ा उठाना और मिलकर काम करने पर परमेश्वर द्वारा उसे आशीष मिलने से बड़ा आनन्द मिलता है। सामुहिक तौर पर सभी लोगों की कमज़ोरियों और ताकतों के साथ मिलकर काम को अन्जाम देने में बड़ा मज़ा और यह स्वस्थ रिश्तों को प्रोत्साहित करने का एक महान तरीका है।

सभी कार्यो में सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह है कि,समूह का प्रत्येक सदस्य मसीह की ध्यान दे, और अपनी इच्छा पूरी करने की बजाय उसकी इच्छा को पूरा करे। ऐसा करने से समूह 'आत्म केन्द्रित' होने की बजाय 'दूसरों की परवाह' करने वाला बन जाता है।

समूह के सदस्यों को 'दूसरों ' की मदद करने के लिए एक दूसरे की खैर खबर रखने वाला होना चाहिए ताकि वे एक दूसरे के बोझ को उठा सकें।

यदि समूह के किसी भी सदस्य को किसी भी क्षेत्र में कैसी भी ज़रूरत है, तो समूह के दूसरे लोग उस ज़रूरत को पूरा करने में मदद करने के द्वारा या कठिन परिस्थितियों में उसकी सहायता करने के द्वारा अपने प्रेम को दर्शा सकते हैं। जिस प्रकार एक परिवार में खून का रिश्ता रखने वाले लोग जरूरत पड़ने पर एक दूसरे के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगाने को तैयार रहते हैं उसी प्रकार से हमारे आत्मिक समूहों में भी सदस्यों को एक दूसरे की ज़रूरतों के प्रति सक्रिय रहना चाहिए।

फिर भी एक समूह में एक कार्य ऐसा है जो उनकी स्वस्थ सम्बन्धों को बनाने में सहायता करता है, अर्थात वे मसीह की आज्ञा के अनुसार अपने पड़ोसी को प्रेम करने के लिए उन पर बाहरी तौर से नज़र रखते हैं। हम सभी लोग व्यक्तिगत तौर पर परमेश्वर की महान आज्ञा को पूरा करने के लिए ज़िम्मेदार हैं, लेकिन जब हम सामुहिक तौर पर किसी काम को करते हैं तो उसका प्रभाव अधिक होता है। यदि समूह के किसी सदस्य को अपने पड़ोसी की किसी ज़रूरत का पता चलता है तो समूह के बाकि सभी लोग मिलकर उस ज़रूरत को पूरा करने के द्वारा उस व्यक्ति पर मसीह के प्रेम को प्रगट कर सकते हैं, भले ही व्यक्ति आपके समूह में से बहुत से लोगों के लिए अनजान ही व्यक्ति क्यों न हो। यह गवाही कितनी सुन्दर होगी। वह व्यक्ति यह देखकर अचम्भित हो जाएगा कि कैसे कोई व्यक्तियों का समूह उसकी मदद कर सकता है और इस तरह आपके सामने उस व्यक्ति को सुसमाचार सुनाने का सुन्दर अवसर होगा। इस तरह से एक साथ मिलकर सेवा करने से सारे समूह के प्रत्येक सदस्य का आपसी सम्बन्ध मज़बूत होगा। कोई साझा किया गया सामान्य लक्ष्य,एकता उत्पन्न करने वाला तत्व होता है, जिसे कभी भी तुच्छ नहीं समझना चाहिए।

व्यवहारिक तौर पर कहें तो, बहुत से ऐसे साधारण तरीके हैं, जिनका इस्तेमाल प्रति सप्ताह अपने छोटे समूह में करने पर समूह के सदस्यों के बीच सम्बन्ध मज़बूत हो सकता है। समूह के सदस्यों को प्रार्थना सभा के अलावा भी सप्ताह के बीच में आपस में मिलने के लिए प्रोत्साहित करें। एक साथ मिलकर भोजन करें, आपस में मिलकर कुछ ऐसे कार्यक्रम तय करें जिसमें आपको एक साथ मिलकर खेलने, हंसी मजाक करने का भी अवसर प्राप्त हो सके। सबसे बढ़कर, प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपकों समूह के सारे सदस्यों के प्रति तरस व प्रेम की भावना दे। व्यक्तित्वों में विविधता होने का यह अर्थ नहीं है कि स्वस्थ सम्बन्धों को प्रोत्साहित करना असम्भव है। जी नहीं: परमेश्वर विविधताओं से बड़ा है। वह विश्वासियों के किसी भी समूह में एकता उत्पन्न कर सकता है: अपेक्षाओं के साथ प्रार्थना करें, और दीनता के साथ उसके लिए कार्य।

व्यवहारिक तौर पर कहें तो, बहुत से ऐसे साधारण तरीके हैं, जिनका इस्तेमाल प्रति सप्ताह अपने छोटे समूह में करने पर समूह के सदस्यों के बीच सम्बन्ध मज़बूत हो सकता है।

सुर्खियां

- छोटे समूह लोगों के व्यक्तिगत वरदानों को विकसित करने तथा सामुहिक वरदानों को विकसित करने से बढ़ते हैं और मिलकर देह की सेवा करते हैं।

- एक परिवार के रूप में समूह के सदस्यों की प्रेम के साथ जरूरतो को पूरा करने के लिए समूह को सदस्यों के भीतरी जीवन पर नज़र रखना चाहिए लेकिन संसार भर में भटके हुओं तक सुसमाचार पहुंचाने के लिए बाहर वालों पर भी नज़र रखना ज़रूरी है।

- रिश्तों में थोड़ा बहुत समय देने के प्रयास से, आपके छोटे समूह का रिश्ता व्यक्तित्वों की विविधता की परवाह न करते हुए आपस में सुन्दर बन सकता है।

अब आप बताएं

- आपके छोटे समूह ने खुद आगे बढ़कर कैसे आपस में सभी सदस्यों के बीच रिश्तों को बनाया?

- अपने समूह के प्रत्येक सदस्य का नाम लेकर परमेश्वर से उसके प्रति आपके मन में प्रेम उत्पन्न करने के लिए, तथा यह दिखाने के लि प्रार्थना करें आप कैसे उनकी ज़रूरतों को पूरा कर सकते हैं।

- परमेश्वर से अपने समूह को किसी एक जन की सेवा करने का अवसर प्रदान करने के लिए प्रार्थना करें जिसे मसीह के प्रेम को अपने जीवन में अनुभव करने की अति आवश्यकता हो।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing